हमारा सरदार

२३ दिसम्बर १९५०

चौधरी चरण सिंह

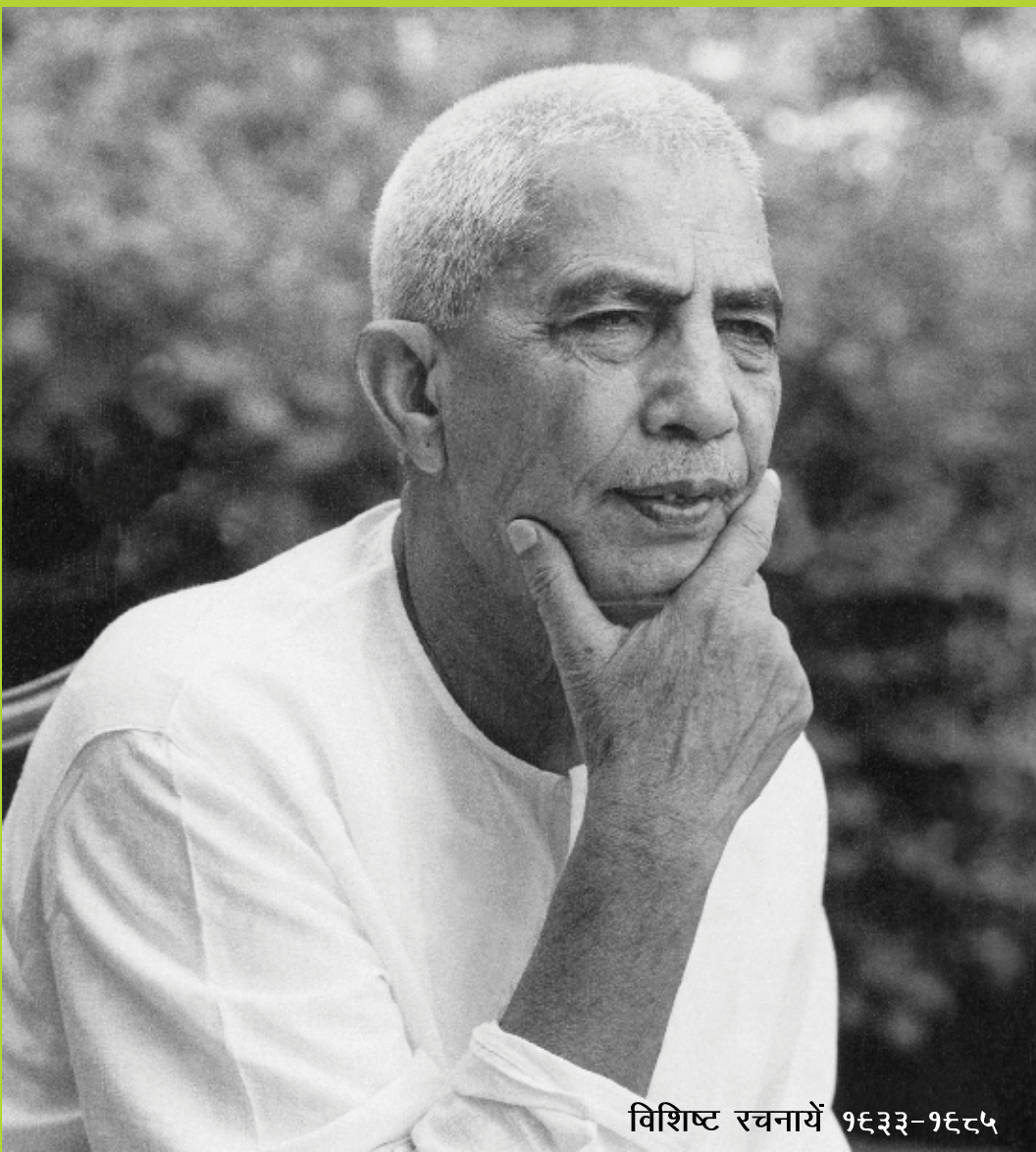

विशिष्ट रचनायें १९३३-१९८५

२६ जनवरी २०२२
चरण सिंह अभिलेखागार द्वारा प्रकाशित
www.charansingh.org
info@charansingh.org

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन को केवल पूर्व अनुमति के साथ
पुनः प्रस्तुत, वितरित या प्रसारित किया जा सकता है।
अनुमति के लिए कृपया लिखें info@charansingh.org

अक्षर तथा आवरण संयोजन राम दास लाल
सौरभ प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा, भारत द्वारा मुद्रित।

चरण सिंह के पिता मीर सिंह तथा माता नेत्र कौर, १९५०

चरण सिंह का जन्म २३ दिसंबर १९०२ को "एक साधारण किसान के यहां छप्पर छवाये मिट्टी की दीवारों से बने घर में हुआ था, जहां आंगन में एक कुंआ था, जिसका पानी पीने और सिंचाई के काम आता था।"[1] संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के मेरठ जिले के नूरपुर गांव में एक पट्टेदार गरीब किसान की कच्ची मढ़ैया में पैदा हुआ यह शिशु आज़ाद भारत में देहात की बुलंद आवाज बना।

---

* चरण सिंह के अपने शब्दों में

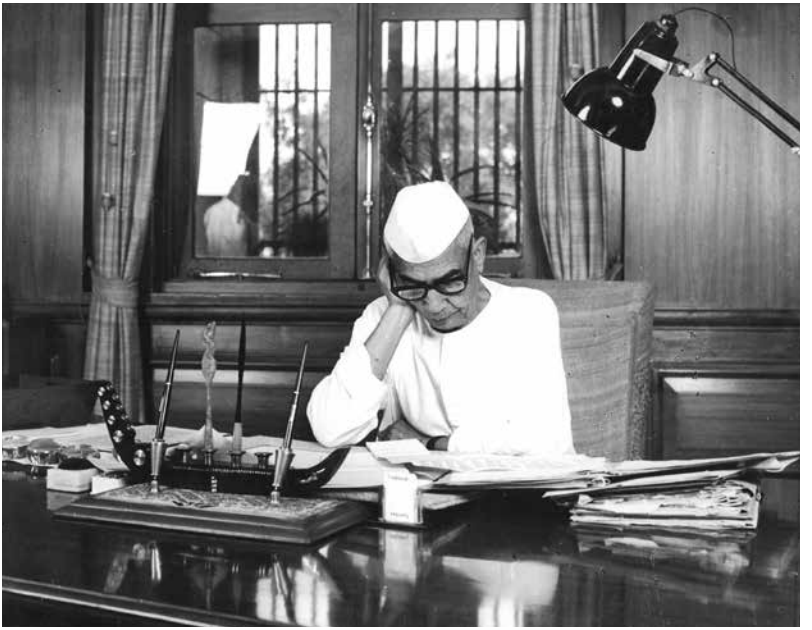

चौधरी चरण सिंह
भारत के प्रधान मंत्री। दिल्लीं, १९७९

ग्रामीण भारत के जैविक बुद्धिजीवी

१
हमारा सरदार

चौधरी चरणसिंह गांधीजी के बाद सरदार पटेल की कर्म पद्धति और चिन्तनधारा से प्रभावित थे, दरअसल पटेल उनके आदर्श थे। सरदार पटेल के प्रति उनके मनोभाव यहां दिये गये लेख से स्पष्ट होते हैं। चौधरी साहब का यह लेख सरदार पटेल के देहावसान पर, झांसी से प्रकाशित 'बुन्देलखण्ड' साप्ताहिक के, २३ दिसम्बर, १९५० के अंक में प्रकाशित हुआ था।

आज भारतवर्ष लुट गया। आज उसका वह लाल, जिसके बल पर वह निर्बल होते हुए भी अपने को सशक्त समझता था, उससे रूठ गया, आज भारत का लौह पुरुष जिसकी गरज सुनकर देश–द्रोही तथा देश के शत्रु दहला करते थे, विदा हो गया। आज हमारा सरदार सदैव के लिए सो गया।

यह वज्रपात शुक्रवार को प्रातःकाल, ९ बजकर ३७ मिनट पर, बम्बई नगर में हुआ। सरदार बल्लभ भाई पटेल तीन सप्ताह से हृदय रोग से, देहली में बीमार थे और गत मंगलवार को डॉक्टरों की सलाह से जलवायु परिवर्तन के विचार से वायुयान द्वारा बम्बई पहुंचे। बहुत तड़के ३ बजे रोग का प्रबल आक्रमण हुआ और थोड़ी देर बाद ही वे बेहोश हो गए। साढ़े आठ बजे के लगभग कुछ सचेत हुए परन्तु एक घण्टे के अन्दर ही उनके प्राण–पखेरू उड़ गये।

बल्लभ भाई पटेल का जन्म अहमदाबाद जिले के नदियाद ताल्लुका के करमचंद ग्राम में ३१ अक्टूबर सन् १८७५ को एक किसान घराने में हुआ। बल्लभ भाई के पिता झबर भाई पटेल ने सन् १८५७ में भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम में भाग लिया था, जिसके कारण वह होल्कर द्वारा बन्दी–गृह में रखे गये। इस प्रकार बल्लभ भाई को देश–प्रेम विरासत में ही मिला था।

सन् १८९७ में आपने नदियाद से हाई स्कूल की परीक्षा पास की।

कालिज शिक्षा के भार वहन की सामर्थ्य न होने के कारण आपने सन् १९०० में मुख्तारी की परीक्षा पास की और गोधरा में मुख्तार हो गये। आपकी प्रैक्टिस खूब चमकी।

आपका विवाह संस्कार १८ वर्ष की आयु में ही हो गया, परन्तु कुछ ही वर्ष बाद आपकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया। आपने फिर विवाह नहीं किया। आपके दो सन्तान हैं– दया भाई व कुमारी मणिबेन।

आरम्भ से ही आपकी इच्छा बैरिस्टर बनने की थी। पत्नी–विछोह के बाद कुछ रुपया जमा हो जाने पर विलायत जाकर बैरिस्टर बनने की अभिलाषा फिर जाग उठी। सन् १९१३ में आप इंग्लैंड से बैरिस्टर बनकर लौटे। बड़े भाई के आदेशानुसार आप गृह–भार संभालने लगे और विट्ठल भाई राजनीति में उतर पड़े।

सन् १९१६ में आपका अहमदाबाद के मजदूरों की हड़ताल के सिलसिले में एक जादूगर से साक्षात हुआ, जिसका नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। सन् १९१७ में खेड़ा किसान सत्याग्रह में गांधी का जादू पूरी तौर पर असर कर गया। इस सत्याग्रह के नेतृत्व का बहुत कुछ भार महात्मा जी ने बल्लभ भाई के कंधों पर रखा। गुजरात में एक नयी जागृति का श्रीगणेश हुआ और बल्लभ भाई ने संसार को एक दूसरी ही दृष्टि से देखना आरम्भ किया। ऐश्वर्य की सामग्री में अब उनके लिए कोई आकर्षण नहीं रह गया।

सन् १९१९ में आपने रौलेट एक्ट के काले कानूनों के विरुद्ध सत्याग्रह करने का फार्म भर दिया और गुजरात राजनैतिक कान्फ्रेंस में गांधी जी के असहयोग सम्बंधी प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन किया। सन् १९२२ में बल्लभ भाई ने बौरसद की जनता के, जिस पर अकारण ही एक ताजीरी टैक्स लाद दिया गया था, सत्याग्रह आन्दोलन का और सन् १९२३ में नागपुर के मजदूर झंडा आन्दोलन का सफल संचालन किया। सन् १९२४ में आप अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन चुने गये। इस पद को आपने सन १९२८ तक सशोभित किया। सन १९२८ में बल्लभ भाई पटेल के जीवन व राष्ट्रीय संग्राम के इतिहास में वह घटना घटी, जिसने आपको भारत का सरदार बना दिया। बन्दोबस्त में बारदोली के किसानों पर बिना समुचित कारणों के ३० प्रतिशत मालगुजारी बढ़ा दी गई। पूज्य बापू ने किसानों को सत्याग्रह का परामर्श दिया और बल्लभ भाई मैदान में कूद पड़े। इस आन्दोलन में आपने अपनी अद्‌भुत कार्य–क्षमता का परिचय दिया। ४ फरवरी १९२८ को ७९ गांवों के प्रतिनिधियों ने आपको अपना नेता चुना। नेता चुने जाते ही सरदार ने अपने सैनिकों को ललकारा–"सरकार तुम्हें नष्ट–भ्रष्ट करने का कुचक्र रचेगी। तुम्हें धन और परिवार के प्रति मोह

त्यागकर लड़ना होगा, "यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं, सीस उतारे भुई धरे, तब बैठे घर माहिं।"

बल्लभ भाई ने घर–घर अलख जगाई। एक अंग्रेजी समाचार–पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के संवाददाता को कुछ दिन बाद ही लिखना पड़ा–"बारदोली से अंग्रेजी राज्य उठ चुका है।" बहनों ने युग–युग की सामाजिक शृंखलाओं को छिन्न–भिन्न कर सत्याग्रह में भाग लिया। जब्तियों, गिरफ्तारियों की धूम मच गई, किसानों ने हर प्रकार के अत्याचार सहे और उफ न की। बारदोली के असाधारण संगठन व त्याग को देखकर लोग दंग रह गये। छह महीने के अन्दर ही अंग्रेजी सरकार ने घुटने टेक दिये। बन्दोबस्त की पुनः जांच करने, जब्त की हुई ज़मीन लौटाने तथा कैदियों को छोड़ने की घोषणा की।

गांधी जी आपकी तीक्ष्ण बुद्धि एवं संगठन शक्ति पर मुग्ध हो गये और उन्होंने आपको 'कौम का सरदार' कहकर सम्बोधित किया। उस दिन से बल्लभ भाई पटेल गुजरात के 'बेताज के बादशाह' और भारत वर्ष के 'सरदार' हो गये। सन् १९३१ में कृतज्ञ राष्ट्र ने अपने सेनानी को उस समय देश में जो सबसे बड़ी इज्जत थी, वह बख्शी–सरदार पटेल को इंडियन नेशनल कांग्रेस का सभापति चुन लिया गया।

सन् १९३०–३१, ३२–३४, ४०–४१, व ४२–४५ के आन्दोलनों में सरदार पटेल ही बापू के दाहिने हाथ रहे। अपने अंतिम दिनों तक महात्मा जी अपने विचारों को कार्य में परिणित करने के लिए बराबर सरदार पटेल की कार्य–क्षमता व संगठन–बुद्धि पर भरोसा रखते रहे।

भारतवर्ष महाभारत के काल से छोटे–छोटे टुकड़ों में विभक्त था। अंग्रेज जब विदा हुए, तो ५६२ रजवाड़ों को स्वतंत्र छोड़ गये। सरदार ने अपने कौशल से बात की बात में देश का एकीकरण कर दिया और देश की, अपने अकेले इसी काम से, ऐसी सेवा की, जैसी कि संसार में किसी व्यक्ति ने अपने देश की नहीं की होगी। जब तक भारतवर्ष के आकाश में सूर्य चमकता रहेगा, देश सरदार के इस उपकार को नहीं भूलेगा।

अपने नेता की आज्ञा को शिरोधार्य रखना व अनुशासन में बंधे रहना सरदार के स्वभाव का अंग बन गया था परन्तु जिस कठोरता के साथ वह स्वयं अनुशासन का पालन करते थे, उसी प्रकार वह दूसरों से भी आशा रखते थे। अनुशासन की अवहेलना को उन्होंने कभी नहीं सहा। कांग्रेस पार्लियामेन्ट्री बोर्ड के अध्यक्ष होने के नाते उन्होंने नरीमेन, डॉक्टर खरे व वीर सुभाष जैसे गणमान्य व्यक्तियों को भी अनुशासन भंग का दोषी होने पर क्षमा नहीं किया।

सरदार एक अनुपम साहस के धनी थे। गत पांच वर्ष से यह देश

एक भीषण संकट से गुजर रहा है। ऐसी विकट अवस्थाओं में, जो कि जन–सेवकों को किंकर्तव्य विमूढ़ बना देती हैं, साधारण व्यक्ति निराशा के सागर में डूबने लगता है। ऐसी अंधकारमय स्थिति में भारत की जनता को अपने इस लौह–पुरुष का सहारा था, उन पर उसको गर्व था। सरदार के रहते हुए लोगों का ढाढस बंधा था, "कोई बात बिगड़ेगी, तो सरदार तो मौजूद हैं, संभाल लेंगे।"

आज इस अभागे देश का वह सहारा, निर्बल की वह लकड़ी जाती रही। गत वर्ष अपने जन्म–दिवस पर बोलते हुए इस सिंहपुरुष ने अहमदाबाद में कहा था "मैं इस संसार में कुछ वर्ष और रहने का इच्छुक हूं, यद्यपि महात्मा गांधी, कस्तूरबा और महादेव देसाई के समीप जल्द पहुंचने की उत्कट अभिलाषा मेरे मन में बनी है। मैं अब केवल, जो काम वह अधूरा छोड़ गए हैं, उसे पूरा करने के लिए ही रुका हुआ हूं।"

सरदार! आप बापू के पास जाने के लिए उतावले थे, अवश्य जाइए। हमें रोकने का कोई अधिकार भी नहीं है। आपने मातृभूमि की वह सेवा की, जो बिरले ही कर पाते हैं। भारत के इतिहास–गगन में आपका नाम अमर रहेगा। आज राष्ट्र का प्रत्येक प्राणी आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह आपकी आत्मा को शांति दे।

चौधरी चरण सिंह द्वारा रचित कृतियां

शिष्टाचार, १९४१. (२०१ पृष्ट)

हाउ टू एबोलिश जमींदारीः ह्विच एल्टरनेटिव सिस्टम टू एडाप्ट। (ज़मींदारी उन्मूलन कैसे करें: किस वैकल्पिक प्रणाली को अपनाएं) १९४७. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

एबोलिशन ऑफ ज़मींदारीः टू अल्टरनेटिव्ज। (जमींदारी उन्मूलनः दो विकल्प) १९४७. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (२६३ पृष्ट)

एबोलिशन ऑफ जमींदारी इन यू० पी०: क्रिटिक अंसरड। (उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलनः आलोचकों को जवाब) १९४९. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

व्हितहर कोआपरेटिव फार्मिंग? (सामूहिक खेती की दिशा?) १९५६. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश।

एग्रेरियन रिवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश। (उत्तर प्रदेश में कृषि क्रांति) १९५७. प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश १९५८ लखनऊ, सुपरिन्टेन्डेन्ट, प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश। (६६ पृष्ट)

जॉइंट फार्मिंग एक्स–रैडः द प्रॉब्लम एंड इट्स सोल्यूशन। (संयुक्त खेतीः समस्या और समाधान) १९५९. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (३२२ पृष्ट)

इण्डियाज पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशन। (भारत की गरीबी और उसका समाधान) १९६४. एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई। (५२७ पृष्ट)

इण्डियन इकोनॉमिक पॉलिसीः दि गांधियन ब्लूप्रिंट। (भारत की अर्थनीतिः एक गांधीवादी रूपरेखा) १९७८. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (१२७ पृष्ट)

इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इण्डियाः इट्स कॉज़ एण्ड क्योर। (भारत की भयावह आर्थिक स्तिथिः कारन एवं निदान) १९८१. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (५९८ पृष्ट)

लैण्ड रिफॉर्म्स इन यू० पी० एण्ड दि कुलक्स। (उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार एवं कुलक वर्ग) १९८६. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (२२० पृष्ट)

'विशिष्ट रचनाएंः चौधरी चरण सिंह' भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह द्वारा १९३३ और १९८५ के बीच लिखित २२ महत्वपूर्ण लेखों और भाषणों का संग्रह है। इस पुस्तक के अध्ययन से आज का पाठक वर्ग जान सकेगा कि मौजूदा समय की चुनौतियां न तो नई हैं और न ही समाधानहीन। इनसे निपटने के लिए एक मन–सोच अथवा जिगरा चाहिए, जो निश्चय ही धरा–पुत्र चरण सिंह में था। उनका लेखन उस प्रकाशस्तंभ की तरह है जो समुद्र में भटके हुए जहाजों को किनारे तक आने का रास्ता दिखाता है। उनके लेखन के आलोक में हम मौजूदा चुनौतियों को सही परिप्रेक्ष्य में न केवल समझ सकते हैं अपितु उनका समाधान भी पा सकते हैं। इन लेखों में उनकी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि के दर्शन होते हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से इन लेखों को सामाजिक लेखन, आर्थिक लेखन, राजनीतिक लेखन एवं उपसंहार – चार खण्डों में विभाजित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह की अध्यात्मिक अंतश्चेतना और राजनीतिक मेधा महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी से अनुप्रेरित रही, तो सरदार पटेल उनके नायक रहे। इन विभूतियों पर चौधरी साहब ने अपने विचार लेखों में प्रस्तुत किये हैं। जाति–प्रथा, आरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण, राष्ट्रभाषा जैसे सामाजिक मुद्दों के साथ ही शिष्टाचार जैसे विरल विषय पर भी दो लेख **खण्ड एकः सामाजिक लेखन** में दिये गये हैं।

चौधरी साहब भारत की उन्नति का मूल आधार कृषि, हथकरघा और ग्रामीण भारत को मानते थे। उनकी दृष्टि में ग्रामीण भारत ही वह नियामक तत्व रहा जिसे प्रमुखता देकर देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है, साथ ही बेरोजगारी जैसी विकट समस्या को भी दूर किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भूमि सम्बंधी सुधारों और जमींदारी समाप्त करने को लेकर चौधरी चरण सिंह पर धनी किसानों के पक्षधर होने के आरोप विरोधियों ने लगाये। उनका उन्होंने बेहद तार्किक ढंग से उत्तर दिया है। गांव–किसान और खेती के प्रति उपेक्षापूर्ण नीतियां एवं काले धन की समस्या जैसे तथा उपरोक्त विषयों पर केन्द्रित लेख **खण्ड दोः आर्थिक लेखन** के अन्तर्गत दिये गये हैं।

खण्ड तीनः राजनीतिक लेखन के अन्तर्गत भारत की लम्बी गुलामी के मूल कारणों का विश्लेषण, गांधी–चिंतन, देश में पहली गैर–कांग्रेसी जनता पार्टी की सरकार की आधारभूत नीतियां, देश विख्यात माया त्यागी कांड का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, भाषा आधारित राज्यों के खतरे आदि मुद्दों के अलावा उनके नायक सरदार पटेल की स्मृति पर आधारित लेख हैं। इसी खण्ड में चौधरी साहब के ऐतिहासिक महत्व के दो भाषण भी संकलित हैं, जो लोकशाही पर संकट और राष्ट्रीय विघटन के खतरों के प्रति सचेत करते हैं।

अंतिम **खण्ड चारः उपसंहार** है, जिसमें चौधरी साहब ने राजनीति, समाज नीति और देश से सम्बंधित अधिकतर मुद्दों पर संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

Charan Singh Archives
www.charansingh.org

मूल्य ₹६६